

(খ) বংশগত বৈশিষ্ট্যঃ

আমন পুরুষস্বত্বদেয় এমন পিতা বা পিতৃস্বত্ব বা তাদের দীর্ঘ আয়তন-বংশ বৈশিষ্ট্যে এমন ব্যক্তি দেয় ও এমন পুরুষস্বত্বদেয় প্রবলিত করতে পারে, তবে বংশগত বৈশিষ্ট্য জিনের বা উৎসস্থির প্রাথমিক মাতৃস্বত্ব উৎসস্থিত অনধীকার,

(গ) জাতীয় বৈশিষ্ট্যের সঙ্গে পরিচিতিঃ

মাতৃস্বত্ব-বৃদ্ধি জন্ম, বাচ্চ, উন্নয়ন, গল্প, প্রবন্ধ, জীবনী পত্রের মধ্যদিয়ে জাতীয় প্রতিশ্রুতি হাতে যায়, জাতীয় বৈশিষ্ট্যের মূল স্রোতের সঙ্গে পরিচিতি হলে মানুষ জাতির সমাজ ও জাতীয় প্রবন্ধে আমাদের উদ্বোধন করে তোলে,

(ঘ) সুনামসংক্রান্ত গিমাঃ

সুস্থ ও ধ্যানধারণা, বুদ্ধি, চিন্তামাত্রের আনন্দিত প্রকাশেরী, প্রসারিত উদ্ভূতি ও জাতির সত্তা, দেশের প্রতি ভালোবাসা প্রভৃতি সুনামসংক্রান্ত মনুষ্যকে সুনামসংক্রান্ত করে তোলে, মাতৃস্বত্বের চর্চায় মধ্যমে স্বীকৃত সূত্রের সঙ্গে বিজ্ঞান সম্বন্ধে,

(ঙ) অস্বাভাবিক চিত্তবিকারের সঙ্গে পরিচিতিঃ

মাতৃস্বত্বের মধ্যমে ছাত্রের জ্ঞান বিজ্ঞানের নানা উন্নততর চিত্তবিকারের সঙ্গে পরিচিতি হতে পারে, দৈনন্দিন যেসব নতুন নতুন খবর বিশ্ব আন্দোলন তোলে সেগুলি সংগঠিত করে আনন্দসেই দৈনিক খবরের জগত থেকে পরিচিতি হতে পারে, নতুন অবিচ্ছিন্ন, নতুন নতুন চিত্তবিকারের সঙ্গে অনুবাদ প্রক্রিয়া মধ্যমে বিভিন্ন দেশে প্রসারিত হয় ও ছাত্রের মাতৃস্বত্ব উদ্ভূত করে হতে সেগুলি সংগ্রহ করতে পারে,

ব্যক্তিগত দিচ্ছ হোলে স্বাতন্ত্র্য চৰ্চাৰ অধিকৃততা :-

ভাৰতৰ 'আত্মশিক্ষা'ৰ দ্বাৰা স্বাতন্ত্র্যৰ উন্নয়নৰ লক্ষ্য-
স্বত্বস্বত্ব, নিজস্ব স্বাতন্ত্র্য চৰ্চাৰ মাধ্যমে ভাৰতৰ আত্মশিক্ষা
যদি স্বাচ্ছন্দ্য বা নিজে আশ্ৰয় দিয়া হয় :-

(৬) অন্তৰ্নিহিত প্ৰত্যাহ্বানৰ বিকাশ :- ভাৰতৰ- মণ্ডি যে অন্তৰ্নিহিত

বিকাশ ঘটাবলৈ প্ৰস্তুত, আহিতি সৃষ্টি, চিন্তাশীলতা, মিন্ধুৰতা,
ভাৰতীয় দৰ্শন, আত্মশিক্ষা-স্বাচ্ছন্দ্য-অন্তৰ্নিহিত প্ৰত্যাহ্বান-
বিকাশ স্বাতন্ত্র্য চৰ্চাৰ- দিচ্ছ হৈছে প্ৰায় :-

(৭) শিশুদেৱ- উন্নয়নৰ- বিকাশ সহায়তা :-

স্বাতন্ত্র্যৰ উন্নয়ন সহায়

অন্যদিকে তাদেৱ- বহুতৰ বিকাশ হৈছে প্ৰায়- উন্নয়নৰ
বহুতৰ উন্নয়ন হৈছে প্ৰায়, শৈক্ষিক বা শিল্প নিৰ্মিত হৈছে
উন্নয়ন সহায় নিজেই বিকাশ হৈছে উন্নয়নশীলতা, শৈক্ষিক
উন্নয়নশীলতা- উন্নয়নশীলতা হৈছে, তাই শিশুদেৱ- শিশু,
শিশু স্বাতন্ত্র্য- চৰ্চাৰ দ্বাৰা স্বাতন্ত্র্য দিচ্ছ হৈছে :-

(৮) চাৰিত্ৰ্য উন্নয়নৰ- পৰিত্ৰাণৰ- সহায়তা :-

আত্মশিক্ষাৰ-

আত্মশিক্ষা, উন্নয়নশীলতা- আত্মশিক্ষা, আত্মশিক্ষা-
আত্মশিক্ষা- উন্নয়ন- আত্মশিক্ষা, আত্মশিক্ষা-
চৰিত্ৰৰ- আত্মশিক্ষা- আত্মশিক্ষা-
আত্মশিক্ষা- আত্মশিক্ষা- আত্মশিক্ষা-
দিচ্ছ হৈছে স্বাতন্ত্র্য- দিচ্ছ হৈছে :-

(যা) ব্যক্তি ও চরিত্র-আধুনিক অধ্যায়:-

বিদ্যালয়ে মাতৃভাষা ও

আমহিত্যের-সম্বন্ধে অনুশীলন ছাত্রদের-ব্যক্তি ও চরিত্র-
গঠনের-সম্বন্ধে অধ্যয়ন, জন্ম, অধিকতর গল্প-প্রকৃতির-সম্বন্ধে
অন্য-আদর্শ-অনুপ্রানিত-হতে-পারে, বানান-সুতালম, বীর-
মিমালা, সুভাষচন্দ্র-প্রকৃতি-চরিত্রের-দ্বারা-ও-অনুপ্রানিত-
হয়ে-বনিষ্ঠ-ব্যক্তি-গঠনে-সক্ষম-হতে-পারে।

(৬) মাতৃভাষা-বিনে-অন্য-বিষয়ের-মিমালা:-

পুস্তকান, স্ক্রিপ্তান,

ইতিহাস-প্রকৃতি-লেখার-সময়-মাতে-এটা-সিদ্ধি-লাভে-মাতৃভাষা-
ব্যবহার-এই-সম্বন্ধে-নতুন-বিদ্যে-হবে, স্ক্রিপ্তানের-অনুপ্রানিত-
মাতে-ও-সাবলীলভাবে-প্রথম-ছাতে-পারে, সুদূর-
নিধিতে-পারে-এসম্বন্ধে-বিবেচনা-করা-দিতে-পারে।

(৬) শাস্তি, জন্ম, জোনক, বেদনা, পীতি-বোলোভাস্যর-বেদনা :-

মাতৃভাষার-সম্বন্ধে-ছাত্রের-জন্ম-বেদনা,

সুখ-দুঃখ-পীতি-বোলোভাস্যর-প্রথম-ছাতে-মানসিক-বৃত্তি-
অন্য-সম্বন্ধে-অনুপ্রানিত-মানসিক-আবেগ-উদ্ভূত-হবে।

মাতৃভাষা-বিনে-মানের-সম্বন্ধে-অনুপ্রানিত-প্রথম-ছাতে-
কারণে-সম্ভব।

ভাষিক-সাহিত্য-পৃষ্ঠি :-

ভাষিক-সাহিত্য-পৃষ্ঠি-মাতৃভাষার-
বেদন-অনুপ্রানিত, ভাষিক-সুভূতি, ভাষিক-সুভূতি-ভাষিক-
পৃষ্ঠি, ভাষিক-সুভূতি, ভাষিক-সুভূতি-সম্বন্ধে-সাহিত্য-
অভিযান্ত্রিক-হয়, ভাষিক-সুভূতি-সম্বন্ধে-মাতৃভাষার-সম্বন্ধে-
ছাত্র-সুভূতি-এই-প্রথম-ছাতে-সম্ভব-নয়, এই-ভাষিক-সাহিত্য-
পৃষ্ঠিতে-মাতৃভাষা-এই-সম্বন্ধে-সুভূতি।

প্ৰশ্ন: - শিক্ষণ মাধ্যমে মাতৃভাষায়- গৰুভাষায় জোৰ দিয়াৰে
 শিক্ষাৰ্থীৰে স্বীকাৰ কৰা হৈছে, যি প্ৰাথমিকৰ পৰা- উচ্চশিক্ষা
 পৰ্যায়ত প্ৰাথমিক ৰূপে শিক্ষণ মাধ্যমে মাতৃভাষা প্ৰচ-
 লিত হৈছে। উচ্চশিক্ষা প্ৰায় শিক্ষণ মাধ্যম হিচাপে মাতৃভাষা
 প্ৰচলন উৎসাহিত কৰা হৈছে, যি- বিধে মাতৃভাষায়-
 পঢ়ি-শুভ ফলিত হৈছে যিহে জাৰা কৰা হয়,

মাতৃভাষায় শিক্ষাদানৰে- জোৰ কৰা হৈছে যিহে বৰীত্ৰ-
 নায় মাতৃভাষাৰে মাতৃভাষায়- পঢ়ি-শুভ ফলিত হৈছে, যিহে
 বিদেশী ভাষায়- অধ্যয়ন মাধ্যমীয়- বহুক্ষেত্ৰে হৃদয়ংগম কৰা হৈছে
 হলে ধৰ্ম-বোধন আশ্ৰয়- প্ৰয়োজন হৈছে পঢ়ি-শুভ ফলিত
 আনন্দ প্ৰাপ্ত কৰা হয়। এই ধৰ্ম-বোধন জড়িত উৎসাহিত
 বিধে শিক্ষণ মাধ্যম- শিক্ষণ হিচাপে গ্ৰহণ কৰা হৈছে
 যেন মুখৰে বিদ্যাৰে জ্ঞানৰে পঢ়ি-শুভ ফলিত হৈছে শিক্ষণ মাধ্যমীয়-
 উচ্চশিক্ষাৰে- পঢ়ি-শুভ ফলিত হৈছে যিহে- প্ৰয়োজন হৈছে
 হয় না, এই মাতৃভাষায় শিক্ষণ মাধ্যমে কৰা হৈছে অধ্যয়ন,

মাতৃভাষায় শিক্ষণ মাধ্যমে জোৰ কৰা নিম্নলিখিত
 সুফল পোৱা পাৰি, যথা নিম্নলিখিত -

১) বীৰন-বোধ: - বীৰন-বোধে মাতৃভাষায়- পঢ়ি-শুভ ফলিত হৈছে
 বীৰন-বোধ, বিদ্যাৰে প্ৰাথমিক কৰাৰে- পঢ়ি-শুভ ফলিত হৈছে
 মাতৃভাষায়- জ্ঞান-বোধন-প্ৰদান কৰা হৈছে, এই মাতৃভাষায়
 শিক্ষণ-বোধন কৰা হৈছে শিক্ষণ- পঢ়ি-শুভ ফলিত হৈছে
 হৈছে, এই মাতৃভাষায়- হৈছে বীৰন-বোধ, বীৰন-বোধ
 কৰাৰে বোধ,

(খ) চিকিৎসা ও চোখৰ সংগতি অৰ্থন :-

সাধাৰণ মানুহৰ চোখৰ চিকিৎসা-সংগতি অৰ্থন-ৰূপে আছে। মানুহৰ চোখৰ চিকিৎসা-সংগতি অৰ্থন-ৰূপে আছে। মানুহৰ চোখৰ চিকিৎসা-সংগতি অৰ্থন-ৰূপে আছে।

(গ) অময় চিকিৎসা-অৰ্থন-ৰূপে :-

সাধাৰণ মানুহৰ অময় চিকিৎসা-অৰ্থন-ৰূপে আছে। অময় চিকিৎসা-অৰ্থন-ৰূপে আছে।

(ঘ) কম্পনাগতি চিকিৎসা-অৰ্থন :-

সাধাৰণ মানুহৰ কম্পনাগতি চিকিৎসা-অৰ্থন-ৰূপে আছে। কম্পনাগতি চিকিৎসা-অৰ্থন-ৰূপে আছে।

(ঙ) বন্দা ও চোখৰ অৰ্থন-ৰূপ :-

সাধাৰণ মানুহৰ বন্দা ও চোখৰ অৰ্থন-ৰূপে আছে। বন্দা ও চোখৰ অৰ্থন-ৰূপে আছে।

(চ) সুজনমীল আছে তেন্তে অৰ্থন :-

সাধাৰণ মানুহৰ সুজনমীল আছে তেন্তে অৰ্থন-ৰূপে আছে। সুজনমীল আছে তেন্তে অৰ্থন-ৰূপে আছে।

(ছ) অস্থিচিকিৎসা-সংগতি অৰ্থন :-

সাধাৰণ মানুহৰ অস্থিচিকিৎসা-সংগতি অৰ্থন-ৰূপে আছে। অস্থিচিকিৎসা-সংগতি অৰ্থন-ৰূপে আছে।

(জ) ব্যক্তিগত চিকিৎসা-অৰ্থন :-

সাধাৰণ মানুহৰ ব্যক্তিগত চিকিৎসা-অৰ্থন-ৰূপে আছে। ব্যক্তিগত চিকিৎসা-অৰ্থন-ৰূপে আছে।

২। যেটা শিখনের চারটি ক্ষেত্র- কী কী ও এর বৈশিষ্ট্যগুলি
 আলোচনা করে,
 বাংলা শিখন পদ্ধতি কতগুলি গোছে সেগুলির বর্ণনা দাও,
 দক্ষতা ক্যাটাগরি- বোর্ড কোম্পানি গিছে Oxford Dictionary
 এ উল্লেখ আছে - 'Ability' এর অর্থ হল কোন কার্যসম্পাদনের
 জন্য প্রয়োজনীয় সামর্থ্য বা ক্ষমতা বোঝে,
 যেটা ব্যবহারের জন্য চারটি দক্ষতার- শিখন
 প্রয়োজন, সেগুলি হল —

- (i) শ্রবন [Listening]
- (ii) কথন [Speaking]
- (iii) পঠন [Reading]
- (iv) লিখন [Writing]

১। শ্রবন দক্ষতা [Listening Ability] :-

শ্রবন দক্ষতার- মূল হল অন্যের- বোঝা- শুনতে
 সক্ষমতা, শ্রবন দক্ষতার বৈশিষ্ট্যগুলি হল নিম্নরূপ —

- ১। শ্রবন যে একটি গুরুত্বপূর্ণ দক্ষতা তা সিন্থে শিক্ষার্থীদের- মাঝে
 ছাড়াই হবে।
- ২। বোঝা, বোঝা- বোঝার- বোঝার- বোঝার- তা সক্ষমতা, সক্ষমতা,
 ৩। বোঝার- বোঝার- বোঝার- বোঝার- বোঝার- তা সক্ষমতা,
 তা সক্ষমতা।
- ৪। বোঝার- বোঝার- বোঝার- বোঝার- বোঝার- তা সক্ষমতা,
 তা সক্ষমতা।
- ৫। শ্রবন দক্ষতার- বোঝার- বোঝার- বোঝার- তা সক্ষমতা,
 তা সক্ষমতা।

(i) ଉଚ୍ଚ ନୀତି [Speaking Ability] :- ଉଚ୍ଚ ନୀତିରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବା

ଦୀର୍ଘକାଳ - ସଫଳତା ପ୍ରାପ୍ତି ପାଇଁ ଯତ୍ନ, ସୁନ୍ଦର ଉଚ୍ଚ ନୀତିରେ
ଲେଖନୀୟତା ଓ ନିୟମ,

- ① ସ୍ପଷ୍ଟତା [Clarity]
- ② ଶୁଣିବାଯୋଗ୍ୟତା [Audibility]
- ③ ପ୍ରଭାବଶୀଳତା [Effectiveness]
- ④ ସହଜତା [Easy]
- ⑤ ଶବ୍ଦମୟତା [Elocution]
- ⑥ ଘଟଣା ସୁଚ୍ଚତା [Fluency]
- ⑦ ଶୈଳୀଗୁଣ [Elegance]

(ii) ଉଚ୍ଚ ନୀତି [Reading Ability] :-

ଉଚ୍ଚ ନୀତିରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବା
କ୍ଷମା ଦେବା, ନିୟମରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବା ଓ ଉଚ୍ଚ ନୀତିରେ
କାର୍ଯ୍ୟ କରିବା ଓ ନିୟମରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବା ଓ ନିୟମରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବା
ଓ ନିୟମରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବା ଓ ନିୟମରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବା

- ① ନିୟମ ଓ ସଫଳତାରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବା ଓ ନିୟମରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବା
- ② କାର୍ଯ୍ୟ ସଫଳତାରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବା ଓ ନିୟମରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବା
- ③ କାର୍ଯ୍ୟ ସଫଳତାରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବା ଓ ନିୟମରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବା
- ④ କାର୍ଯ୍ୟ ସଫଳତାରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବା ଓ ନିୟମରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବା

① शब्दावलीकरण पद्धति [Word Method] :-

निष्पत्तिसिद्धि के अर्थ में शब्दों को जोड़कर शब्दों के अर्थों को समझाने की प्रणाली शब्दावलीकरण पद्धति कहते हैं।

* श्रुतियाँ :-

- ① शब्दों को जोड़कर शब्दों के अर्थों को समझाने की प्रणाली शब्दावलीकरण पद्धति कहते हैं।
- ② शब्दावलीकरण - वाक्यों में शब्दों के अर्थों को समझाने की प्रणाली शब्दावलीकरण पद्धति कहते हैं।
- ③ इस प्रणाली में शब्दों के अर्थों को समझाने की प्रणाली शब्दावलीकरण पद्धति कहते हैं।

* अनुश्रुतियाँ :-

- ① शब्दावलीकरण की प्रणाली शब्दावलीकरण पद्धति कहते हैं।
- ② शब्दावलीकरण की प्रणाली शब्दावलीकरण पद्धति कहते हैं।
- ③ शब्दावलीकरण की प्रणाली शब्दावलीकरण पद्धति कहते हैं।

② वर्णमालिक पद्धति [Alphabetic Method] :-

वर्णमालिक पद्धति - शब्दों को वर्णों के अनुसार क्रम में व्यवस्थित करने की प्रणाली वर्णमालिक पद्धति कहते हैं।

* श्रुतियाँ :-

- ① वर्णमालिक पद्धति - शब्दों को वर्णों के अनुसार क्रम में व्यवस्थित करने की प्रणाली वर्णमालिक पद्धति कहते हैं।
- ② वर्णमालिक पद्धति - शब्दों को वर्णों के अनुसार क्रम में व्यवस्थित करने की प्रणाली वर्णमालिक पद्धति कहते हैं।
- ③ वर्णमालिक पद्धति - शब्दों को वर्णों के अनुसार क्रम में व्यवस्थित करने की प्रणाली वर्णमालिक पद्धति कहते हैं।

* अनुश्रुतियाँ :-

- ① वर्णमालिक पद्धति - शब्दों को वर्णों के अनुसार क्रम में व्यवस्थित करने की प्रणाली वर्णमालिक पद्धति कहते हैं।
- ② वर्णमालिक पद्धति - शब्दों को वर्णों के अनुसार क्रम में व्यवस्थित करने की प्रणाली वर्णमालिक पद्धति कहते हैं।

3) वाक्यरूपम नाम्नाति-[Sentence Method]:-

एकै एकै वाक्य गीतैरु माथुमे मिषाथीदेरु मिषादान करुव नाम्नाति के बना इय वाक्यरूपम नाम्नाति,

* सुविधि:-

- 1) अइय वाक्य लेखाव- अत्रोम लेखी इते,
- 2) वाक्य गीत अइयके मिषाथीदेरु विरुना क्खाले,
- 3) अर्थयुक्तु 3 अर्थहीन वाक्ये- माथु माथु करुते अगरे,

* अनुविधि:-

- 1) एकेन मिषाथी के वाक्य लिखन के अइकेन मिषाथेकरु मलेन विरुजन करु कथिन,
- 2) अगरे ए अइयके वाक्य गीत करुते माथुके अरु एकेन निश्चित करु,

4) अतिव्युत्पन्न नाम्नाति-[Historic Method]:-

अतिव्युत्पन्न माथुमे मिषाथीदेरु- मिषाथीदेरु- नाम्नाति के बना इय अतिव्युत्पन्न नाम्नाति,

* सुविधि:-

- 1) मिषाथीदेरु के अइय अइय- इति माथु,
- 2) अतिव्युत्पन्न करुते- अइयके विरुना क्खाले इय,
- 3) मिषाथीदेरु- अइयमाथुकेरु विरुना यते,

* अनुविधि:-

- 1) अतिव्युत्पन्न अति एकेन अइय इय अइकेन अइयमाथुके
- अइय सुविधि इय,
- 2) अइके- अइयके अइयके अइय इय मा अइके अइयके अइयके- अइके इय,

⑤ অনুলব্ধন পদ্ধতি [Imitation Method] :-

শিক্ষার্থীদের অনুলব্ধনের মাধ্যমে যে শিক্ষাদান করা-ওতে অনুলব্ধন পদ্ধতি বলে।

* সুবিধা:-

- ① বহুসংখ্যক শিক্ষার্থীকে- একই সময়ে- অনুলব্ধন করা যায়।
- ② শিক্ষার্থীদের- দীর্ঘ-দীর্ঘ-সময়-অনুলব্ধন-করা-সহজ-আছে।
- ③ অনুলব্ধন-মাধ্যমে-ই-প্রশিক্ষিত-পরিমাণ-কম-থাকে।

* অসুবিধা:-

- ① অনুলব্ধনের-কালে-শিক্ষার্থীদের-মৌলিক-জ্ঞান-হারা-হয়ে-যাচ্ছে।
- ② মাঝে-অসুবিধিত-উদ্ভাবনে-অবৃত্ত-হয়ে-না-আছে-এসকলে-নতুন-দেখে-হয়।

⑥ অনুবন্ধন পদ্ধতি [Correlation Method] :-

একটি-বিষয়ের-প্রকৃত-কেন্দ্র-বিষয়ের-প্রয়োজন-অনুলব্ধনের-মাধ্যমে-যে-শিক্ষাদান-ওতে-অনুবন্ধন-পদ্ধতি-বলে।

* সুবিধা:-

- ① মৌলিক-বিষয়ে-অনুলব্ধন-শিক্ষার্থীদের-সহজ-করা-হয়।
- ② শিক্ষার্থীদের-কেন্দ্র-পরিচিতি-হিসেবে-হয়।
- ③ শিক্ষার্থীদের-স্বাভাবিক-বৃদ্ধি-সহায়তা-করে।

* অসুবিধা:-

- ① বিষয়ের-উপর-প্রত্যক্ষ-শিক্ষার্থীদের-প্রতি-কোন-প্রভাব-হয়-না।
- ② একই-ধরনের-অনুলব্ধন-প্রকার-প্রয়োগ-করা-অসম্ভব।

7) विवृतिमूलक मद्दति [Narrative Method] :-

विषयबद्ध सामग्रीको अनु विवृति-प्राशस्त्य
विषयदानको- मद्दति विवृतिमूलक मद्दति-बले,

* सूचि :-

- 1) विषयबद्ध-सामग्री-सुसंयोजित आस्ये,
- 2) विवृति-विधि-आकार-सुयोग्य थाम्ने,
- 3) विषयबद्ध-सुसंगत-उ-आवलीन-रूप-उठे।

* असूचि :-

- 1) विवृति-समसंयोजित-विषयसामग्री-आवलीन-रूप-देने,
- 2) समसंयोजित-विवृति-मूल-विषय-प्रदेश-विदुषी-रूप-असूचि-सूचि-छरे।

8) आलोचना मद्दति [Discussion Method] :-

आलोचना-सामग्री-मध्यम-परीक्षण-मद्दति-
संगत-रूप-थाम्ने, उद्यन-उठे-आलोचना-मद्दति-बले।

* सूचि :-

- 1) आलोचना-सामग्री-विषयसामग्री-आलोचना-सामग्री-
आना-रूप-थाम्ने,
- 2) विषयसामग्री-सुसंगत-रूप-प्रदान-छरे-आस्ये।
- 3) विषयसामग्री-आलोचना-सामग्री-प्रदान-छरे।

* असूचि :-

- 1) आलोचना-सामग्री-आलोचना-सामग्री-
आना-रूप-थाम्ने,
- 2) आलोचना-सामग्री-आलोचना-सामग्री-
आना-रूप-थाम्ने,
- 3) आलोचना-सामग्री-आलोचना-सामग्री-
आना-रूप-थाम्ने,

কৃতজ্ঞতা স্বীকার

আমি, উদীপন মুখার্জী, সিক্কিম - সরকারি ইন্সটিটিউট - এখানে
 প্রদক্ষিণন করেছি - প্রথম বর্ষের জন্য, আমি আমার এই প্রদক্ষিণনের
 কাজটি শেষ করতে পারি - যে জন্যে আমাকে ও আমার
 প্রধান ছাত্র আমার সঙ্গে প্রায় দু'সপ্তাহ, আমার উক্ত কাজটি
 সম্পূর্ণ করতে আমাকে বিশেষভাবে সহায়তা করেছেন আমাদের
 প্রধানের - স্বামী সিংহের - প্রদেয় অক্লান্ত সুস্থিত
 ঘনিষ্ঠ সহায়তা, ওনার নির্দেশিত মত অনুযায়ী - প্রদক্ষিণন আমার
 সম্পূর্ণতা লাভ করেছে, আমি আমার কৃতজ্ঞতা জানাবছি আমাদের
 প্রধানের প্রতি কৃতজ্ঞতা - সিংহের ও আমার সহযোগীদের -
 ওরন্ত আমাকে এই কাজটি সম্পূর্ণ করতে সার্থক সহায়তা
 করেছে।

এই প্রসঙ্গে আমি আমার - কৃতজ্ঞতা - অক্লান্ত যত্ন
 প্রত্যেক দিনের আনন্দ ও প্রশান্তি জানাই।

উদীপন মুখার্জী

বোলন - ২৭

উদীপন মুখার্জী

ছাত্রের স্বাক্ষর -

অক্লান্ততার স্বাক্ষর -